विदर्भ स्वाभिमान

www.vidarbhswabhiman.com

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189

❖ अमरावती, 12 से 18 फरवरी 2026 ❖वर्ष :16 ❖अंक- 39 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य-4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027❖डाक : शुक्रवार-शनिवार MAHHIN/2010/ 43881

बाबूजी के आदर्श विचार

जीवन की खुशियां

आंखों के सामने बड़े-बड़े मौत को देखने के बाद भी जिनका अहंकार खत्म नहीं होता है, ऐसे लोगों को कभी समाधान नहीं मिलता है. जीवन में किसका अहंकार करते हैं, जो तुम्हारा है ही नहीं. पद,प्रतिष्ठा न कोई ले जा सका है और न ही कभी लेकर जा सकता है. इसलिए मौत को ध्यान में रहकर हंसते रहो, हंसाते रहो, कौन सांस आखिरी है, पता नहीं.किस बात का हम घमंड करते हैं, शरीर भी स्मशान तक ही रहता है.

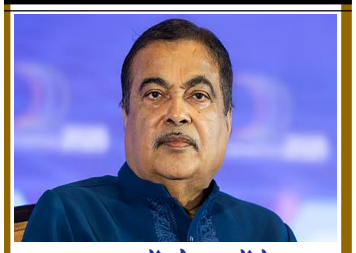

5 साल में पैदा होंगे 5 लाख से अधिक रोजगार

नागपुर- केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री और दबंग नेता नितिन गड़करी के मुताबिक केन्द्रीय बजट में महाराष्ट्र की विभिन्न परियोजनाओं को भरपूर निधि दी गई है. इससे विदर्भ में पांच लाख से अधिक रोजगार के अवसर उत्पन्न हों गे. आम बजट से महाराष्ट्र व विदर्भ में विकास योजनाओं को गति मिलेगी. पांच साल में विदिर्भ में पांच लाख नए रोजगार पैदा किए जाएंगे. अमृत भारत योजना के तहत 128 रेलवे स्टेशनों का विकास किया जाएगा. नागपुर-मुंबई हाईस्पीड रेल प्रकल्प भी पूरा किया जाएगा. बीस नए राष्ट्रीय जलमार्ग विकसित किया जाएगा.

अमरावती जिले के विकास को लगेंगे पंख

जनप्रतिनिधियों का प्रयास, सीएम फड़णवीस क़ा प्रतिसाद और कलेक्टर येरेकर ने निभाई भूमिका

विदर्भ स्वाभिमान, 11 फरवरी

मुंबई/अमरावती-जिले के विकास को पंख लगने की प्रबल संभावना है. पालकमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले सहित सभी जनप्रतिनिधियों के प्रयास और जिलाधिकारी आशीष येरेकर की सक्रियता के चलते अमरावती जिले को 300 करोड़ रूपए अतिरिक्त मिलने की संभावना बढ़ गई है. इससे निश्चित ही जिले के विकास को गति मिलेगी. राज्य नियोजन समिति की बैठक में इस विषय पर चर्चा हुई. जिलाधिकारी आशीष येरेकर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए महसूल भवन से स्टेट प्लानिंग कमिटी की मीटिंग में मौजूद थे. इस मौके पर उन्होंने जिले के ओवरऑल डेवलपमेंट के लिए 300 करोड़ रुपये और देने की मांग की.

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस मांग पर पॉजिटिव जवाब दिया. मुख्यमंत्री फडणवीस ने भरोसा जताया कि अमरावती जिले के ओवरऑल डेवलपमेंट के लिए फंड की कोई कमी नहीं होगी.

इस मौके पर विधायक सुलभा खोडके, जिप सीईओ संजीता महापात्रा, डिप्टी कंजर्वेटर ऑफ फॉरेस्ट अजुर्ना के. आर., डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग ऑफिसर वर्षा भाकरे और संबंधित विभाग प्रमुख मौजूद थे.जिलाधिकारी आशीष येरेकर ने प्रेजेंटेशन के ज़रिए जिले के अलग-अलग डिपार्टमेंट, उनके चल रहे काम, मौजूदा स्थिति और भविष्य की प्लानिंग के बारे में डिटेल में जानकारी दी. अमरावती जिले में 14 तहसीलें हैं. इस वजह से, जिले को दूसरे जिलों के मुकाबले डेवलपमेंट के कामों के लिए ज़्यादा फंड की ज़रूरत है. डीपीसी के साल 2025-26 के प्लान के मुताबिक, 527 करोड़ रुपये के डेवलपमेंट के काम चल रहे हैं. साल 2026-27 के लिए 434.71 करोड़ रुपये दिए गए हैं. इसके हिसाब से प्लान का काम हो चुका है. लेकिन येरेकर ने मांग की कि इसमें और 300 करोड़ रुपये की ज़रूरत है. जिले के डेवलपमेंट के लिए तालुका एक ज़रूरी फैक्टर है. डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर ने जिले की आबादी, तालुका की संख्या और ज्योग्राफिकल एरिया को देखते हुए एक्स्ट्रा फंड की ज़रूरत पर कड़ा रुख अपनाया. **शेष पेज 3 पर**

महाशिवरात्रि 15 को, बम-बम भोले से गूंजें गे शिवालय,लाखों भक्त उमड़ेंगे कोंडेश्वर मंदिर

विदर्भ स्वाभिमान, 11 फरवरी

अमरावती- हर वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी महाशिवररात्रि उत्सव पूरे जिले में मनाया जा रहा है. रविवार 15 फरवरी को महाशिवरात्रि पर प्राचीन गड़गड़ेश्वर महादेव मंदिर, 5 हजार साल पुराने कोंडेश्वर महादेव मंदिर, तपोवनेश्वर मंदिर के साथ ही सालबर्डी के भोलेनाथ मंदिर में भक्तों की अपार भीड़ उमड़ने वाली है. इसकी तैयारियां पुलिस तथा प्रशासन द्वारा की जा रही हैं. मंदिर में उमड़ने वाली भीड़ का नियोजन किया जा रहा है. पुरुषोत्तम नगर के श्री नर्मदेश्वर महादेव मंदिर में भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है.

महादेवा जातो गा भोले रे नाथा के जयघोष के साथ कंधों पर त्रिशूल लेकर, डफली की ताल पर नाचते-गाते लाखों भोले भक्त महाशिवरात्रि के अवसर पर श्रीक्षेत्र सालबर्डी में

छोटे महादेव के दर्शन के लिए उमड़ेंगे.आठ दिनों का विशाल मेला भरता है, जिसमें महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं. दर्जनों शिवालयों में श्री शिव महापुराण सप्ताह चल रहा है. इसका समापन भी इसी दिन होने वाला है. भक्तों से महाप्रसाद का लाभ उठाने का आग्रह भी मंदिर संस्थान ट्रस्ट द्वारा किया गया है. पूरा जिले भोलेमय हो जाने वाला है.

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

जिले के लिए भी यह शर्मिंगदी से कम नहीं है

आजादी के 8 दशक के बाद भी अगर कई गांवों को शुद्ध पेयजल नहीं दिला पाए, बल्कि जलापूर्ति योजनाओं के नाम पर करोड़ों रूपए खर्च किया गया है, उसके बाद भी अगर लोगों को पानी के लिए तरसना पड़ता है, धारणी के दुर्गम गांवों की महिलाओं को दूर से पानी लाना पड़ रहा है तो निश्चित ही यह भी किसी शर्मिंदगी से कम नहीं है. आखिर क्यों कर पेयजल की स्थायी व्यवस्था नहीं हो पाती है. टैंकर के नाम पर भ्रष्टाचार के साथ ही योजनाओं की दुरूस्ती के नाम पर लाखों का खर्च होने के बाद भी दिक्कत निश्चित ही चिंतनीय नहीं है. जिले में विधायकों का अंकुश प्रशासन पर नहीं है, इसके पीछे क्या कारण है यह तो वही जानें लेकिन गर्मी के दिनों में कई गांवों में दिक्कत निश्चित ही चिंता की बात है. जिले से लेकर केंद्र सरकार तक हर घर में जहां समुचित मात्रा में पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रयास कर रही है वहीं दूसरी ओर आखिर कहां ऐसी कमी हो रही है कि गर्मी के दिनों में हर बार जल संकट की स्थिति पैदा हो जाती है. अमरावती जिले के 545 गांव आज भी जला पूर्ति का इंतजार करते हैं. आदिवासी बहुल धारणी मेलघाट के कई अति दुर्गम गांवों में महिलाओं को आज भी दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है. अशुद्ध पानी के कारण बीमारियों का खतरा सदा बना रहता है. हजारों योजनाएं और सैकड़ो कुएं रहने के बाद भी जलापूर्ति के लिए टैंकर का सहारा लेना पड़ता है. टैंकर सेवा हर साल भ्रष्टाचार तथा गड़बड़ी के लिए चर्चाओं में रहती है.

अमरावती जिला प्रशासन ने हर बार की तरह इस बार भी जिले के विभिन्न गांव की प्यास बुझाने के लिए लगभग 20 करोड रूपए का वित्तीय नियोजन किया है. आजादी के इतने दशकों के बाद भी अगर हम जनता को शुद्ध पानी उपलब्ध कराने में विफल रहे हैं तो निश्चित तौर पर यह हमारी प्रशासनिक असफलता कहना गलत नहीं होगा. जलापूर्ति के नाम से हर साल लाखों रूपए की गड़बड़ी होती है लेकिन इस समस्या का अभी तक दीर्घकालीन समाधान नहीं मिल पाया है. सवाल यह है कि जब तक प्रशासन संवेदनशील नहीं होता है तब तक जनता का जीवन स्तर सुधरने की संभावना बहुत कम रहती है. वर्तमान दौर में कागजी खानापूर्ति पर अधिक ध्यान दिया जाता है. सरकार द्वारा कई बार दी गई निधि संबंधित योजनाओं पर खर्च नहीं होती है और कई बार तो वित्तीय वर्ष पूरा हो जाने के बाद भी निधि बच जाती है. प्रशासनिक लापरवाही का खामियाजा गरीब जनता को भुगतना पड़ता है. चिखलदरा के 15 गांव टैंकर के भरोसे हैं. सरकारी आंकड़ों पर गौर किया जाए तो जिले में 50037 नल जल योजनाएं, 1772 हैंड पंप और 2056 निजी कुएं भी उपलब्ध है, इन पर अभी तक करोड़ों रूपए खर्च हुआ होगा लेकिन आज भी जलापूर्ति की समस्या जिले में पूरी तरह से हल नहीं हुई है.सवाल यह है कि जब तक प्रशासन दायित्व को लेकर मानवसेवा से प्रेरित नहीं होता है तब तक सरकार कितनी ही कल्याणकारी योजनाए बनाए, उसका परिणाम मजबूत नहीं हो सकता है. वहीं संवेदनशीलता कई समस्याओं का समाधान कर सकती है.

अहंकारी का पतन निश्चित होता है

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

क़हते हैं कि जीवन में पद प्रतिष्ठा मिलने के बाद जमीन पर बहुत कम लोग ही रहते हैं. ऐसे लोग दुनिया में कभी मरते नहीं है. लेकिन कई लोग आज भी ऐसे होते हैं, जो जीवन में अपने अहंकार अथवा धन,सम्पत्ति, पद,प्रतिष्ठा के चलते इतने अंधे हो जाते हैं कि वह भूल जाते हैं कि मैयत में जाने वाला परिवार भी कई बार पूरा जलने का इंतजार नहीं करता है. चार दिन की जिंदगी में अगर हमारा अहंकार हमसे भी अधिक है तो सावधान, यह सोच लेना कि जीवन में अहंकार तो रावण का नहीं चल पाया तो हम किस खेत की मूली हैं. हमारे भी इर्द-गिर्द कई लोगों को आप भी देखते होंगे कि वे किसी भी पद पर रहें, कभी अपने प्रति आत्मीयता नहीं पैदा कर पाते हैं, ऐसे में कई बार पद बड़ा रहने के बाद भी उनके व्यक्तित्व का कद कभी बढ़ता नहीं है. वहीं दूसरी ओर कई लोग बड़े होकर भी आदर्श स्वभाव और विचारों से इतने बड़े रहते हैं कि बिना किसी पद पर रहने के बाद भी उनका सम्मान सर्वत्र होता है.

सनातन धर्म में संसार को माया का संसार कहा गया है. ऐसे में यह सदैव सोचें कि अगली सांस प्रभु ने हमारे खाते में रखी है या नहीं, अगर इस तरह सोचेंगे तो जीवन बहुत आसान हो जाएगा और जीवन इस कदर बीत जाएगा कि पता भी नहीं चलेगा. लेकिन अहंकार के कारण अगर हम स्वयं को अमर समझ लेते हैं तो इतना तय है कि जब तक पद है, प्रतिष्ठा है लोग पूछेंगे, वर्ना हमारे से पहले न जाने कितने राजा-महाराजा आए और चले गए लेकिन आज कोई सबूत नहीं बचा है. हम किस बात पर गर्व करते हैं, यही हमकों पता नहीं है. आखिर इस दुनिया में सबसे प्रिय हमारा शरीर रहता है, वह भी तो हमें श्मशान तक ही साथ देता है.

कई लोग ऐसे होते हैं जो न परिवार, न समाज और न ही देश के लिए योगदान देते हैं लेकिन उनका अहंकार उन्हें कभी किसी से मिलने भी नहीं देता है. सवाल यह है कि अहंकार किसी भी रूप में हो, वह कभी नहीं चल पाता. अमरावती शहर में कई ऐसे लोगों को नाम नहीं ले सकते हैं लेकिन मैं जानता हूं कि उनके अहंकार का प्रतिशत इतना अधिक था कि वह अपनों को भी कभी कुछ नहीं समझते थे, उनकी अंतिम यात्रा में लोग तो शामिल हुए लेकिन चिता जलने के पूर्व ही ऐसे शब्दों में नवाजने लगे, जिसकी उम्मीद नहीं की जा सकती है. क्या प्रभु ने हमें इसके लिए ही जीवन दिया कि हम न किसी के हो सके और न किसी को अपना बना सके. अमरावती की राजनीति में कुछ नेताओं पर भी अहंकार बड़े पैमाने पर हावी होता दिखाई दे रहा है, यह उचित नहीं है. लोगों के दिलों में जगह बना लिया तो निश्चित तौर पर स्वयं के आनंद के साथ ही अन्यों को भी आनंदी रखने की ताकत आती है. हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि पद नहीं बल्की हमारे स्वभाव और विनम्रता के कारण लोग हमें चाहें.अमरावती में सुदाम देशमुख काका जैसे सैकड़ों राजनेता हुए हैं, जिनका सम्मान आज उनके नहीं रहने के बाद भी लगातार बढ़ता रहा है. लेकिन वर्तमान राजनीति में विरोध को दुश्मनी का रूप माना जा रहा है, यह निश्चित तौर पर उचित नहीं है.

कौन बढ़ाएगा अजीत पवार की विरासत

जीवन क्षणभंगुर है लेकिन राजनीति में आगे रहने वालों का जीवन भी सदा कटघरे में ही रहता है. राकांपा प्रमुख अजीत पवार जिस तेजी से अपने चाचा शरद पवार से भी आगे बढ़ रहेथे, ऐसे में राजनीतिक पंडित भी परेशान हो गए थे. मौत अटल है लेकिन इसके बाद विरासत का उत्तराधिकारी भी महत्वपूर्ण होता है. अजीत पवार के बाद राकांपा की विरासत को कौन संभालेगा, इसको लेकर भी चर्चाएं शुरू हो गई हैं. राजनीति में आप हर चीज़ के लिए बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं. लेकिन एक चीज़ ऐसी है जिसके बारे में कोई बात नहीं करता या जिसके लिए कोई बाधा नहीं खड़ी करता, और वो है अचानक मौत!

प्रमोद महाजन, गोपीनाथ मुंडे और अब अजित पवार; व्यक्ति तो गुजर जाते हैं, लेकिन उनकी विरासत रह जाती है. राजनीति, सामाजिक कार्य और परिवार की विरासत. फिर यहीं से असली प्रतिस्पर्धा शुरू होती है, कौन इस विरासत को आगे बढ़ाएगा और सच्चा उत्तराधिकारी कौन होगा?महाजन और मुंडे के उत्तराधिकारी तय हो चुके हैं. लेकिन पवार परिवार के सामने अब एक मुश्किल सवाल खड़ा हो गया है: उन्हें किसका उत्तराधिकारी चुनना चाहिए? अजित पवार का या शरद पवार का?अब तक पवार परिवार में इस बात पर चर्चा होती रही थी कि शरद पवार का असली उत्तराधिकारी कौन होगा. शरद पवार की बढ़ती उम्र को देखते हुए यह चर्चा स्वाभाविक थी. लेकिन अजित पवार के अचानक निधन के बाद सब कुछ बदल गया.इसमें सुनेत्रा पवार ने अप्रत्यक्ष रूप से यह कहा है कि उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के तुरंत बाद वह और उनके बच्चे अजित पवार के उत्तराधिकारी हैं.लेकिन इससे पहले तक, अप्रत्यक्ष रूप से, शरद पवार यह तय कर रहे हैं कि उनकी दूसरी और तीसरी पीढ़ी की राजनीति की बागडोर कौन संभालेगा. पवार का स्वास्थ्य खराब होने के बाद यह सवाल और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है. पवार चाहते हैं कि युवा पीढ़ी को उत्तराधिकार दिया जाना चाहिए. शरद पवार ने सुनेत्रा पवार के शपथ ग्रहण समारोह की सुबह एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करके इसे लेकर कहीं ना कहीं असहमति व्यक्त की. हालांकि, अजित पवार के अंतिम संस्कार के दौरान परिवार में एकता देखने को मिली.लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या परिवार के सदस्यों के बीच मतभेद हैं?

बेशक, अजित पवार और शरद पवार के परिवारों के बीच दरार समय-समय पर स्पष्ट होती रही है, सुबह के शपथ ग्रहण समारोह से लेकर पार्टी में फूट तक. लेकिन उसके बाद, हर बार यह दिखाने का प्रयास किया गया कि 'हम एक परिवार के रूप में एकजुट हैं.'पवार परिवार में चल रहे मौजूदा घटनाक्रमों ने सुनेत्रा पवार और उनके दो बच्चों को शरद पवार, सुप्रिया सुले और रोहित पवार के खिलाफ गुटों में विभाजित कर दिया है.शरद पवार के करीबी सभी नेता कह रहे हैं कि अजित पवार दोनों गुटों को एक होते हुए देखना चाहते थे और यह अजित पवार की अंतिम इच्छा थी. लेकिन, ऐसा लगता है कि सुनेत्रा पवार की पार्टी में लोग अब उन बातों को ज्यादा महत्व नहीं दे रहे हैं.लेकिन इससे कुछ सवाल उठते हैं, जैसे कि क्या शरद पवार दोनों पार्टियों का विलय करके सारी सत्ता अपने हाथों में वापस लेना चाहते हैं? अगर वे ये सत्ता चाहते हैं, तो क्यों?

शरद पवार ने कहा है कि वे दोनों पार्टियों के विलय से संबंधित चर्चाओं में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं थे. दरअसल, पवार उन बैठकों के वीडियो में नजर आ रहे हैं जो सामने आए हैं.हालांकि, उन्होंने यह नहीं कहा कि वे दोनों पार्टियों के गठबंधन के खिलाफ हैं. इसके अलावा, अगर दोनों पार्टियां गठबंधन करने वाली थीं, तो क्या पवार, बीजेपी के साथ सरकार बनाना चाहते थे? और फिर, क्या यह पवार के लिए फायदेमंद होता? क्या यह प्रयोग सफल होता. उम्र को ध्यान में रखते हुए और स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों के कारण पवार परिवार में सक्षम उत्तराधिकारी को लेकर चर्चाएं हो रही हैं. परिवार से अधिक करोड़ों का साम्राज्य रखने वाले पवार परिवार को लेकर कौन उत्तराधिकारी होगा, दोनों राकांपा का विलय होगा, कौन इसका नेतृत्व करेगा, यह अभी अनुत्तरित है.

विदर्भ स्वाभिमान
यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com,rni. no MAHHIN/2010 43881

सकारात्मक सोच, मेहनत,लगन से जीवन में कामयाबी

विदर्भ स्वाभिमान,7 फरवरी

इंदौर- जीवन में हर व्यक्ति की कामयाब इंसान होने की चाहत होती है और होनी भी चाहिए लेकिन सफलता के लिए मेहनत, लगन, बेहतरीन समय प्रबंधन, विनम्रता और हार से कभी भी निराश होने जैसी खूबी का अत्याधिक महत्व होता है. श्रद्धा और विश्वास के साथ जब सकारात्मक सोच होती है तो कामयाबी आसानी से प्राप्त की जा सकती है. इस आशय का स्पष्ट मत प्रेरणादायी वक्ता और इंदौर पोद्दार इंटरनेशनल विद्यालय के प्राचार्य सुधीर महाजन ने कही. उनके मुताबिक स्ट्रेस नहीं लेकर भी कामयाबी के सर्वो च्च पर पहुंचा जा सकता है. लेकिन वर्तमान में कई खामियां ही हमें पीछे खींचने का काम करती हैं.

विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि बचपन से ही हमारी सोच,संस्कार और संगत अगर बेहतरीन है तो कामयाबी की आधी मेहनत में भी आसमानी कामयाबी हासिल की जा सकती है. अच्छी सोच के साथ ही दूसरों को खुशी देने का प्रयास करना चाहिए. ऐसा करने से हमारी खुशी बढ़कर हमें मिलती है. जिंदगी किसी चुनौती से कम नहीं है, लेकिन सकारात्मक सोच जिंदगी को खुशनुमा बनाती है.राष्ट्रीय स्तर के सुख्यात वक्ता सुधीर महाजन के मुताबिक संस्कार, संस्कृति और संघर्ष का त्रिवेणी संगम जीवन में हमें हर कामयाबी का सूत्र बना लेना चाहिए. ने किया. उनके मुताबिक खुशियां देने से बढ़ती है. उसी तरह जब हम किसी को सम्मान देते हैं, प्रेम देते हैं तो वह बढ़कर हमें मिलती है.

हालात का रोना बंद करें

उनके मुताबिक कामयाबी के लिए कई लोगों द्वारा हालात का रोना रोया जाता है. लेकिन सफलता के लिए हालात मायने नहीं रखती है.आप क्या बनना चाहते हैं, क्यों बनना चाहते हैं यह साफ होना चाहिए. बिना लक्ष्य मेहनत भटक जाती है.

मन करे या न करे, रोज़ अपने काम पर लगना ही असली फर्क पैदा करता है. काम में जब आपको आनंद लगेगा तो खाली समय आपको ही सताने लगेगा. इसलिए स्वयं को व्यस्त रखना चाहिए. सिर्फ ज़्यादा काम नहीं, सही दिशा में काम करें. सीखते रहें, तरीका सुधारते रहें.जो समय की कीमत समझ लेता है, समय उसी को कामयाब बनाता है. जीवन में जिसने समय का महत्व समझा, समय सदा उसका महत्व समझता है. हार अंत नहीं है, वह सिखाने आती है. गिरकर उठने वाला ही आगे जाता है.हारने से कभी निराश नहीं होने वालों ने ही सदा इतिहास बनाया है. इसलिए हार को जीत से थोड़ी दूरी मानते हुए इस दूरी को कम करने अधिक मेहनत से प्रयास करना चाहिए.आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही बनते हैं. नकारात्मक लोगों से दूरी रखें.जल्दी सफलता भले न मिले, लेकिन सच्ची मेहनत कभी खाली नहीं जाती.

जीवन में हमारा शरीर सबसे बड़ा उपहार विधाता है. इसे ध्यान में रखते हुए सदा स्वास्थ्य पर ध्यान दें. नाश्ते, खाने से लेकर खेलने और सोने का समय तय करें.स्वस्थ शरीर और शांत मन कामयाबी की

सबसे मज़बूत नींव हैं. स्वस्थ मन ही स्वस्थ विचार देता है और यही विचार जीवन में हर लक्ष्य पूरा करते हैं. जितना संभव हो सके, खुशियां बांटने का प्रयास करना चाहिए.आदर्श प्राचार्य के साथ ही भारतीयता और भारतीय संस्कारों को अत्याधिक महत्व देने वाले राज्यस्तर तथा राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार से सम्मानित सुधीर महाजन के मुताबिक जितना संभव हो सके, हम जिस भी क्षेत्र में हैं, उसमें जान झोंककर कार्य करें और अपने पद के साथ न्याय करने का प्रयास करें. हर व्यक्ति जिस दिन ऐसा करेंगा, भारत को फिर से सोने की चिड़ियां बनाने में कोई नहीं रोक सकेगा. खुशियां हममे ही समाहित रहती हैं. इसलिए सदैव खुश रहने के साथ ही अपने इर्द-गिर्द वालों को भी खुशियां देने का प्रयास जब किया जाता है तो हमारी खुशियां बढ़ती जाती हैं.उनके मुताबिक जब हम खुशियां देने का काम करते हैं तो वह हमारे पास बढ़कर लौट कर आती हैं. इसका अनुमान हमारे प्रसन्न और नाराज देहरे को देखकर सहज लगाया जा सकता है. उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जब हम प्रसन्न होते हैं तो यह हमारे चेहरे से भी दिखाई देता है. खुशियों के कारण शरीर में अपार उर्जा का संचार होता है. लेकिन गुस्से में हमारा ही चेहरा खराब दिखाई देता है. जीवन का भी यही तत्व है. खुश रहें और खुशियां बांटते रहें, गम का पता नहीं चलेगा. जिंदगी खुशियां देने में जब बीतेगी तो हम दुनिया में सदैव छाए रहेंगे.प्राचार्य सुधीर महाजन के मुताबिक जीवन में कामयाबी कोई कठिन नहीं है, केवल जीवन में कुछ बातों का ख्याल रखने पर आसानी से इसे हासिल कर स्वयं का,परिवार, समाज तथा राष्ट्र का भी कल्याण करने में सहयोग दिया जा सकता है. संस्कारों की आज सबसे अधिक जरूरत बच्चों की है, इसकी जिम्मेदारी हर परिवार की रहनी चाहिए.

सैकड़ों ने दी गांग दम्पति को शुभकामनाएँ

विदर्भ स्वाभिमान,7 फरवरी

बडनेरा- जीवन में जीवन संगिनी का महत्व हर व्यक्ति जानते हैं. शास्त्रों में कहा गया है कि घर में लक्ष्मी ही ऐसी होती है जो पूरे घर को स्वर्ग बना देती है. बडनेरा निवासी तथा धार्मिक, सामाजिक, आनंद परिवार के माध्यम से व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलतम परिवार के रूप में गिने जाने वाले आनंद परिवार के प्रमुख और समाजसेवी सुदर्शन गांग तथा सौ. कुंदनताई की शादी की सालगिरह पर सुबह से लेकर शाम तक हजारों लोगों ने शुभकामनाएं दी. साथ ही उनके स्वस्थ, मस्त जीवन की कामना भी की. सुबह से लेकर सोशल मीडिया, फेसबुक, व्यक्तिगत फोन पर संदेश भेजकर भी बड़ी संख्या में चहेतों ने गांग दम्पति को

शादी की सालगिरह पर शुभकामनाएं देते हुए सदा प्रसन्न रहने की काम की. सप्ताह भर में ही गांग परिवार मेंदोहरी खुशी का अनुभव आया. 2 फरवरी को सुदर्शन गांग के जन्मदिन पर भी हर वर्ग के लोगों ने घर पहुंचकर उन्हें 69 वर्ष पूरा होने पर शुभकामनाएं दी और इसी सप्ताह शादी की सालगिरह पर भी हजारों ने आनंद परिवार के खुशियों को बाढ़ने का काम किया.आनंद परिवार ने तथा सुदर्शन गांग ने सभी के प्रेम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी का साधुवाद किया. साथ ही यही प्रेम,अपनापन सदा रहने और सेवा कार्य जारी रखने का भरोसा दिलाया.

विकास को लगेंगे पंख

पेज 1 से जारी-मुख्यमंत्री फडणवीस ने इस मांग पर पॉजिटिव जवाब दिया.डीपीसी के फंड से जिले के डेवलपमेंट के लिए सबसे अच्छा काम करने वालों को फंड की कोई कमी नहीं होगी. येरेकर की मांग के मुताबिक डीपीसी के फंड में एक्स्ट्रा फंड मिलेंगे. इससे अब जिले के ग्रामीण और शहरी इलाकों में पेंडिंग डेवलपमेंट के कामों को नई तेज़ी मिलेगी. इस मौके पर मुख्यमंत्री खोडके ने फडणवीस से साल 2026-27 के लिए म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के तहत अलग-अलग डेवलपमेंट कामों के लिए 100 करोड़ रुपये के एक्स्ट्रा फंड की खास मांग की. जिले में म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के 63 स्कूल हैं. उन्होंने म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन स्कूलों की रिपेयर और मेंटेनेंस के लिए डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग कमिटी प्लान में एक नया अकाउंट हेड शामिल करने की भी मांग की.जिलाधिकारी की पहल तथा सभी के सहयोग के चलते अमरावती जिले के विकास को 300 करोड़ रूपए अलग से मिलने की संभावना बढ़ गई है.जिलाधिकारी आशीष येरेकर द्वारा इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ ही मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस के सकारात्मक प्रतिसाद से जिले के विकास को गति मिलेगी.

लक्ष्मी प्रणयकलह कर कोल्हापुर पहुंच गई

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा

विश्वास वाले भक्तों को हर पल होता है तिरूपति में अनुभव

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं.तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है.जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा.डिजिटल संस्करण

www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

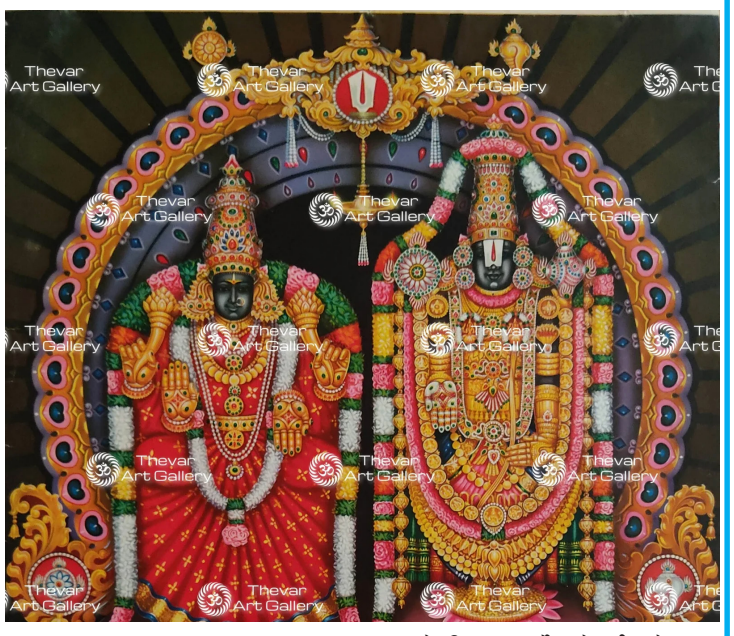

गतांक से जारी- हरि के वक्ष पर भृगु के लात मारते समय उनके वक्ष पर रहनेवाली लक्ष्मी को अपने निवास स्थान पर लात मारनेवाले भृगु पर गुस्सा आया. उन्होंने रूठ कर हरि को नमस्कार करके इस रूप में कहा. 'परब्रह्म स्वरूप समझ कर आपके वक्षस्थल पर मैं इतने दिन रही थी. आज इस पर परपुरुष ने अद्भुत ढंग से मारा है. यह आपके लिए संतोष का विषय बन गया. मुझे गुस्सा आया है. अगर उस मुनींद्र से मैं कुछ कहती तो आपको बुरा लगता. इसलिए हे कमलनाभ! अब मैं तप करना चाहती हूँ. मन में आपके चरणों का ध्यान करते हुए कहीं भी तप करने का ज्ञान मुझे दीजिए.

निर्मल मन से मैं आपके चरणों में ही रहती हूँ.' इस रूप में रमासति ने गुस्सा करते हुए सर झुका कर कहा. पुरुषोत्तम ने लक्ष्मी के मन को जानते हुए प्रेम से इस रूप में कहा. 'हे सिरि! तुम उस मुनि के मारने को अपमान के रूप में मत देखो. विप्र के पदाघात वक्ष पर लगना बहु शुभकर ही है. हे कमलाक्षी! तुम मत रूठो.' हरि की इन बातों को सुनकर लक्ष्मी ने कहा. 'आप आत्माओं के लिए आत्मा हो, विश्व कारण समझ कर आपकी पूजा करनेवाले यहाँ पर आकर मारा है. उस मुनि को कौन-सी गति प्राप्त होगी? वे अति मूर्ख हैं. उनके बारे में मैं सोचना नहीं चाहती हूँ. हे केशव! आपने मुझे बहुत बड़ी भेंट प्रदान की है. उसका पिता ब्रह्म आपका पुत्र है. वह उस ब्रह्म का पुत्र है. छोटा-बड़ा न जानकर अपने को पितामह लगनेवाले को उसने मारा है. उसे छोड़ देने पर भी, आपको परमात्मा न समझता है क्या? ऐसे मुनि का पाद आपके वक्ष पर लगा है. इसलिए अब मेरा यहाँ पर रहना ठीक नहीं है.

मैं कहीं भी रहें आपको चित्त में रखकर पूजा करना मेरे लिए अच्छा है. अथ मुझे आज्ञा दीजिए हे जगदीश हे चित्प्रकाश! सिरि की इन बातों को सुनकर हरि ने हँसते हुए इस रूप में कहा. 'हे सिरि! ब्रह्मा मेरा पुत्र है. वह भृगु मेरा पौत्र है. पुत्र होते मारना बुरा नहीं माना जाता है. बच्चा पेट में रहते हुए माँ को भी मारता है. जिस रूप में माँ प्रेम से फिर उसे नहीं मारती है. वैसे ही प्रेम से मैने उसे स्वीकार किया है. जीव कोटि के लिए मैं पिता समान हूँ. इसलिए उनका दोष नहीं मानता. इससे अलग वह ब्रह्म का पुत्र है. सत्ब्रह्मण है. तापसोत्तम है. तत्ववेदी भी है. सचमुच ही उसने मुझ पर भक्ति रखी है. भक्त ही सचमुच मेरे लिए परम प्रिय हैं. भक्त के लिए मैं प्रिय नहीं हूँ. इसलिए मेरे भक्त मुझे मारने से उनकी निंदा कैसे कर सकता हूँ. वे मुक्तिमान हैं. मुनिजन मुख्य भी हैं. वे तो मूर्ख नहीं हैं. हे भामिनी! भेदोक्तियों को छोड़कर मेरे ह्रदय पर शांतिमति बन कर बसे रहो.' विष्णु की इन बातों को सुनकर लक्ष्मी को बहुत गुस्सा आया. उनके नेत्र रोष से चमके. तब लक्ष्मी ने पति को देखकर कहा. 'हे नामब्रह्माक्षा. सुनिए. परपुरुष के पाद स्पर्श जहाँ लगे हैं. हे हरि! वहाँ अब मैं नहीं रहूँगी. मेरा पातिछ्व्रत धर्म नहीं बिगड़ेगा क्या? अब आगे आपको मुझसे अलग करनेवाले वंशजों को राक्षसों के लिए आप्त बनेंगे. जग-मरण से पीड़ित होंगे. कलियुग में उनके वंशज ब्राह्मण अपने आपका पोषण करने में भी असमर्थ होकर याचक बन जाएँगे. अपने नित्य कर्मों को भी छोड़कर नीचों के सांगत्य में आश्रय प्राप्त करेंगे. गरीब बनकर अपने तोंदू को बढ़ाकर सकल विद्याओं को बेचकर धरती पर जीयेगा कहते हुए आदि लक्ष्मी ने विप्रों को शाप दिया. फिर हरि को देखकर इस रूप में कहा. 'मारनेवाले विप्र को दंड दिए बिना भेज दिया. आगे आपको कायर समझकर नीच दृष्टि से देखते हुए कोई ग्वाला भी ऐसी हिम्मत करेगा.ज़ीवन में खुशियां लाने वाले गोविंदा की कृपा सभी पर बरसती रहे, यही कामना. ज़य गोविंदा.

शेष अगले अंक में

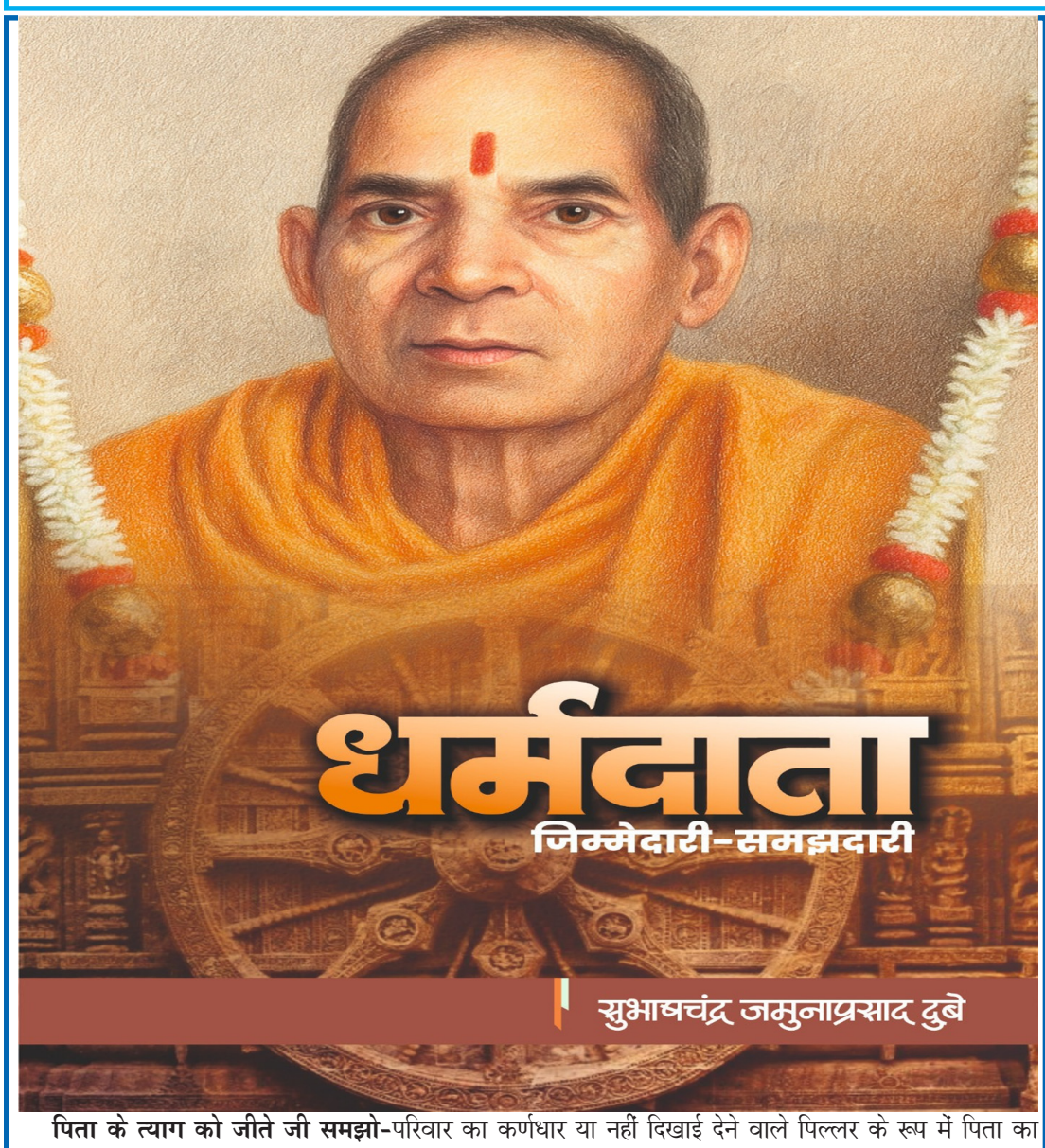

पिता के त्याग को जीते जी समझो-परिवार का कर्णधार या नहीं दिखाई देने वाले पिल्लर के रूप में पिता का उल्लेख किया जा सकता है. मां का त्याग महान है लेकिन हर बच्चे के जीवन में पिता का त्याग किसी भी रूप में कम नहीं है. मेरे जीवन के 50 वर्षों में पिता के त्याग और पिता की महत्ता, माता-पिता की सेवा के फल का प्रत्यक्ष जो अनुभव आया है, उसे किताब के माध्यम से दुनिया के सामने रखने का प्रयास किया है. किताब बुक करने के लिए मुझसे मोबाइल नंबर 9423426199 पर संपर्क कर सकते हैं. घर में रखने लायक है.

विदर्भ स्वाभिमान

मानव धर्म, माता-पिता सेवा महात्म्य तथा
राष्ट्रधर्म प्रोत्साहित करने वाला अखबार

आवश्यक नम्बरों की सूची

सीएम शिकायत पोर्टल	181
विद्युत सेवा	1912
पशु सेवा	1962
पुलिस सेवा	112,100
अग्नि सेवा	101
एमबुलैस सेवा	102
यातायात पुलिस	103
आपदा प्रबंधन	108
चाइल्ड लाइन	1098
रेलवे पूछताछ	139
भ्रष्टाचार विरोधी	1031
रेल दुर्घटना	1072
सड़क दुर्घटना	1073
सी एम सहायता लाइन	1076
क्राइम सटायर	1090
महिला सहायता लाइन	1091
पृथ्वी भूकम्प	1092
बाल शोषण सहायता	1098
किसान काल सेन्टर	1551
नागरिक काल सेन्टर	155300
ब्लड बैंक	9480044444
साइबर अपराध	1930

आत्मीयता,सेवा के समंदर व्यक्तित्व थे

डॉ.रामगोपाल तापडिया के प्रथम पुण्यस्मरण पर विनम्र आदरांजलि

वैद्यकीय व्यवसाय के क्षेत्र की गरिमा को सदैव बढ़ाने का काम करने वाले सुख्यात समाजसेवी डॉ. रामगोपाल तापडिया न केवल शहर बल्कि राष्ट्रीय स्तर के सुख्यात होमियोपैथी चिकित्सक थे. लाखों लोगों के दिलों में उन्हों ने जगह बनाई, इसलिए परिवार के साथ ही ऐसे लोगों को वे जब याद आएंगे बहुत याद आएंगे. जीवन में आने वाले को जाना पड़ता ही है लेकिन उनके जैसे आदर्श डाक्टर कभी मर ही नहीं सकते हैं, उनका सेवा कार्य सदा उन्हें जिंदा रखेगा. बेहतरीन डाक्टर के साथ ही हरदिल अजीज व्यक्तीत्व तथा समाजसेवी थे.मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य रहते समय जिस तरह से महाविद्यालय को आसमानी कामयाबी पर पहुंचाया, उसके चलते उनकी सर्वत्र सराहना होती रही. सेवानिवृत्ति कै बाद भी स्वयं को सामाजिक कामों में जहां झों के रखा. सेवा का यह सिलसिला अंतिम सांस तक चलता रहा. आज पिता के आदर्श नक्शे-कदम पर चलते हुए बेटे और जाने-माने होमियोपैथी डॉ. सारंग तापडिया, बहू डॉ. सोनल तापडिया भी बाबूजी के आदर्श और सेवाभावी विचारों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं. आदर्श पिता के आदर्श पुत्र और परिवार ने आज अमरावती में सदा बेहतरीन करने का काम किया है.

अपनी सेवाओं के कारण शहर की शान बने रहे. शहर ही नहीं तो राष्ट्रीय स्तर के होमियोपैथी विशेषज्ञ, तखतमल होमियोपैथिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य के साथ ही पूरा जीवन वैद्यकीय क्षेत्र की गरिमा के साथ मरीजों की सेवा में समर्पित करने वाले डॉ. रामगोपाल तापडिया आज हमारे बीच भले ही नहीं हैं, लेकिन उनकी याद उनका कार्य तथा परिवार का सामाजिक दायित्व की भावना से किया जाने वाला कार्य निश्चित तौर पर उनकी दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करने का काम करेगा. महान हस्ती रहने के बाद भी उनकी विनम्रता जहां किसी को भी प्रभावित करती थी, वहीं डाक्टर साहब के चेहरे पर सदैव हंसी एवं मुस्कराहट अन्यों को प्रेरणा देती थी. अपने जीवनकाल में विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा था कि जब हम दूसरों की खुशियों के बारे में सोचते हैं तो हमारी खुशियों को कभी भी ग्रहण नहीं लगता है. इसलिए सदैव प्रयास करना चाहिए कि जितना संभव हो सके, हम नेक काम करते रहें. वे जो बोलते थे, उस पर स्वयं पहले अमल करते थे, जीवनभर उन्होंने सदा सेवाभाव रखते हुए मानवता की सेवा की. यही कारण है कि उनकी अंतिम यात्रा में जिस तरह से नागरिकों का सैलाब उमड़ा था, वह उनकी अपार लोकप्रियता, सेवाभाव के नायक को सम्मान देने का सबसे बड़ा लोकप्रमाणपत्र था. रामगोपाल तापड़िया विदर्भ तथा राष्ट्रीय स्तर के वरिष्ठ होमियोपैथी चिकित्सक के रूप में पहचाने जाते थे. कई असाध्य बीमारियों पर भी उनकी दवाएं सदैव कारगर रही थी, कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने जिस तरह से मरीजों को समुचित मार्गदर्शन के साथ ही हिम्मत बंधाने का काम किया, उसकी सर्वत्र सराहना हुई थी, उन्हें अनगिनत पुरस्कार देकर नवाजा गया था.आज भी हजारों ऐसे मरीज हैं, जो याद कर आंखें नम हो जाती हैं. वे जितने बेहतरीन डॉक्टर थे, उतने ही बेहतरीन इन्सान थे. डॉ. तापडिया अक्सर कहते थे कि इन्सान को इन्सान की सेवा करनी चाहिए. यही सबसे बड़ा पुण्य का काम है.

डा. रामगोपाल तापड़िया न केवल आदर्श डॉक्टर थे बल्कि मानवता की सेवा को समर्पित ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए यह केवल व्यवसाय नहीं था बल्कि मानवता की सेवा करने का मजबूत माध्यम था. दुनिया किसी को धन दौलत के कारण याद नहीं करती है लेकिन हमारे स्वभाव और हमारे सेवाभावी व्यक्तित्व के लिए दुनिया हमेशा याद करती है. वर्तमान में वैद्यकीय क्षेत्र जहां अक्सर विवादों में आ गया है और अधिकाधिक कमाई ही इसका लक्ष्य होने का अनुभव आए दिन आ रहा है वही अंबा नगरी में डॉ.रामगोपाल तापड़िया जैसे आदर्श डॉक्टर को आज भी न केवल सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है बल्कि उनके प्रति लोगों में अपार प्रेम और सम्मान है.

समाज में डॉक्टर को ईश्वर का दूसरा रूप माना जाता है, और जब वही डॉक्टर अपने पेशे को केवल आजीविका नहीं बल्कि मानवसेवा का माध्यम मान ले, तब वह वास्तव में आदर्श कहलाता है.डा. रामगोपाल तापड़िया एक मानवसेवी आदर्श होम्योपैथी डॉक्टर के रूप में उनका व्यक्तित्व करुणा, निष्ठा, सादगी और सेवा भाव से ओतप्रोत थे.

डा.तापडिया रोगी को सिर्फ बीमारी नहीं, बल्कि एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में देखते. होम्योपैथी के मूल सिद्धांतों के अनुसार वह रोग की जड़ तक पहुँचने का प्रयास करते और रोगी के शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक पक्षों को समान महत्व देते थे. आज भी हजारों उनके ऐसे मरीज हैं जो हिम्मत हार चुके थे लेकिन उनके उपचार और प्रेरणा के कारण आज भी सुखी जीवन जी रहे हैं.धैर्यपूर्वक रोगी की बात सुनना, उसकी पीड़ा को समझना और विश्वास दिलाना यही उसकी पहली औषधि होती है। डॉक्टर तापड़िया ने जीवन भर अपने मरीज के मामले में इस सिद्धांत का कड़ाई से पालन किया.

मानवसेवी होम्योपैथी डॉक्टर के रूप में उन्होंने जीवन में हमेशा पैसा ही नहीं देखा बल्कि सैकड़ो गरीब और जरूरतमंद मरीजों का निशुल्क मार्गदर्शन और उपचार भी किया.आर्थिक रूप से कमजोर, ग्रामीण एवं वंचित वर्ग के रोगियों के लिए सदैव संवेदनशील रहते थे। निःशुल्क चिकित्सा शिविर, रियायती उपचार और स्वास्थ्य जागरूकता अभियान उसके सेवा कार्यों का अभिन्न हिस्सा बनते थे। वह मुनाफे से अधिक मानव जीवन को महत्व देते रहे, यह उनकी अपार लोकप्रियता ही थी कि उनका अंतिम दर्शन करने के लिए हजारों की संख्या में लोग उमड़े थे. बहुत कम लोगों के नसीब में इस तरह का सम्मान रहता है.इतना ही नहीं तो हर व्यक्ति को अपने व्यवसाय के माध्यम से भी सेवा का काम करने की सीख देते थे. आज वे यद्यपि हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका सेवाकार्य निश्चित तौर पर पूरे तापडिया परिवार और मुझ जैसे व्यक्ति को सदैव प्रेरणा देगा. उनकी स्मृति को नमन करते हैं. परमात्मा उनकी दिव्य आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने की कृपा करें और उनके परिवार को सदा प्रसन्न रखें और उनके ही पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा देते रहें उनके प्रथम पुण्यस्मरण पर विदर्भ स्वाभिमान परिवार प्रभु चरणों में यही कामना करता है. उनके चरणों में विनम्र आदरांजलि.

एक चहेता,अमरावती.

उल्लेखनीय कार्यों के लिए गांधी पीस फाऊंडेशन नेपाल द्वारा ऑनररी डाक्टरेट सम्मान प्रदान कर वर्धा में सम्मानित किया गया था. जीवन में उन्हें तीन दर्जन से अधिक अलग-अलग पुरस्कार सेवा के लिए प्रदान किया गया था.

सेवा को मानते थे परमोधर्म

कहते हैं व्यक्ति चला जाता है लेकिन उनके नेक काम सदा उन्हें जिंदा रखते थे. अपने जन्मदिन पर गरीबों की मदद का व्रत उन्होंने सदा कायम रखा. घर पर हुए समारोह में जरूरतमंद महिला को सिलाई मशीन दी गई. डॉ.कमलताई गवई, सुदर्शन गांग, डॉ.गोविंद कासट के साथ ही अन्य मान्यवर उपस्थित थे. सदा मुस्कराने की उनकी अदा ही प्रेरणादायी थी

सदा मुस्कराते, सभी की हिम्मत बढ़ाते थे

जीवन लेने वाले हर व्यक्ति की वापसी की तारीख भी तय हो जाती है. लेकिन दुनिया में अपने सेवाभाव और कामों के कारण लाखों लोग दुनिया से अलविदा होने के बाद भी कभी नहीं जाते हैं. ऐसे लोगों का कर्म और सामाजिक सेवा, मानवीय सेवा और वैद्यकीय सेवा सदा याद की जाती है. विदर्भस्तर के सुख्यात होमियोपैथी विशेषज्ञ, माता-पिता के आदर्श बेटे सहित जीवन में सभी भूमिकाओं में आदर्श की भूमिका निभाने वाले डॉ. रामगोपाल तापडिया भले ही नहीं हैं लेकिन उनके आदर्श संस्कारों की छाप बेटे डॉ. सारंग, बहू डॉ. सोनाली मैडम के साथ ही पूरे परिवार पर दिखाई देता है. पिता

के आदर्श विचारों पर चलने वाले डॉ. सारंग तापडिया माता-पिता के कितने आदर्श भक्त हैं और जीवन संगिनी डॉ.सोनाली किस तरह कंधे से कंधा मिलाकर वैद्यकीय सेवा देती हैं, यह आदर्श पिता के संस्कारों का ही परिणाम कहना गलत नहीं होगा.कई बार उनसे मुलाकात करने का योग आने पर वे कहते थे कि जीवन में सुख और शांति का सबसे सरल मंत्र है हर परिस्थिति में मुस्कराते रहना. आनंद बाहर की वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे विचारों और दृष्टिकोण में छिपा होता है.छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढने की सलाह देकर स्वयं भी इसी पर अमल करते थे.उनका कहना था कि दूसरों की मदद करिए, मन स्वतः प्रसन्न होगा,सकारात्मक सोच अपनाइए,जो है, उसके लिए प्रभु का आभार व्यक्त करते हुए स्वयं प्रसन्न रहकर अन्यों को भी यही देने की सलाह सदा देते थे.

अमरावती- शहर ही नहीं विदर्भस्तर के सुख्यात होमियोपैथी चिकित्सक डॉ. रामगोपाल तापडिया का उल्लेखनीय कार्यों के लिए सत्कार करती भाजपा की राष्ट्रीय नेत्री तथा अमरावती जिले की पूर्व सांसद नवनीत राणा. धर्म को भी वे बहुत मानते थे. उनका मानना था कि धर्म से आचरण और संस्कार बढ़ता है. स्वयं संतश्री गजानन महाराज की पालखी उठाने के साथ ही धार्मिक कार्यक्रमों में व्यस्तता के बाद भी मौजूदगी दर्ज कराते थे. इसी का यादगार पल.

हरफनमौला,सेवाभावी व्यक्तित्व हैं अरूण भाऊ कडू

जीवन में कुछ लोगों से मुलाकात यादगार हो जाती है, समाज में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो केवल अपने व्यवसाय की सफलता से ही नहीं, बल्कि अपने संवेदनशील ह्रदय और मानवीय दृष्टिकोण से भी लोगों के दिलों में विशेष स्थान बना लेते हैं. ऐसे ही एक सफल व्यवसायी और संवेदनशील व्यक्तित्व हैं आनंद परिवार के बडनेरा निवासी अरूणभाऊ कडू. मुस्कराहट के साथ ही मस्तमौला रहने के बाद भी नियोजन,अनुशासन को अत्याधिक महत्व देते हैं.सेवाभाव, भक्तिभाव तथा विनम्रता संगम उनके व्यक्तित्व की खूबी है. कई जिम्मेदारियां एक साथ निभाने के बाद भी चेहरे पर कभी थकान नहीं रहती है.

बडनेरा में एक साधारण परिवार में जन्मे इस व्यक्तित्व ने प्रारंभ से ही मेहनत, ईमानदारी और आत्मविश्वास को अपना आधार बनाया. बिना सहकार नहीं उद्धार को जीवन का सिद्धांत बनाया और आनंद परिवार के माध्यम से साकार किया. व्यवसाय ही नहीं आनंद परिवार सेवा कामों में अग्रणी है. तीनों ही मित्रों सुदर्शन गांग, अरूण कडू और प्रदीप जैन की दोस्ती और समझदारी की मिसाल देना गलत नहीं होगा. उनके बारे में सुदर्शन गांगजी बताते हैं कि आर्थिक परिस्थितियाँ

जन्मदिन पर विशेष

बहुत अनुकूल नहीं थीं, लेकिन सपने बड़े थे और उन्हें साकार करने का जज़्बा उससे भी बड़ा. शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने छोटे-छोटे कार्यों से अनुभव अर्जित किया और व्यवसाय की बारीकियों को समझा.संतों का आशिर्वाद भी सदा आनंद परिवार को मिला है.

समय के साथ उन्होंने आनंद परिवार की नींब रखी और आज न केवल जिले बल्कि विदर्भस्तर पर कामकाज होता है. अपने व्यवसाय की नींव रखी. प्रारंभिक दौर में अनेक चुनौतियाँ आईं पूंजी की कमी, प्रतिस्पर्धा और बाजार की अनिश्चितता परंत धैर्य, दूरदृष्टि और सकारात्मक सोच ने उन्हें कभी पीछे नहीं हटने दिया. ईमानदार व्यवहार, ग्राहकों के प्रति विश्वास और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता ने उनके व्यवसाय को निरंतर आगे बढ़ाया. आज उनका नाम सफलता और विश्वसनीयता का पर्याय बन चुका है.लेकिन उनकी पहचान केवल एक सफल व्यवसायी तक सीमित नहीं है. वे एक संवेदनशील और मानवीय व्यक्तित्व भी हैं. समाज की समस्याओं के प्रति सजग रहना, जरूरतमंदों की सहायता करना और सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाना उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है. शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में आनंद परिवार के माध्यम से उन्होंने सहयोग और मार्गदर्शन देकर अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है.आनंद परिवार तथा अभिनंदन बैंक कर्मचारियों को परिवार की तरह मानना, युवाओं को रोजगार के अवसर देना और समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना उनके कार्यशैली की पहचान है.हर साल अपने जन्मदिन पर तिरूपति बालाजी में प्रभु गोविंदा का दर्शन करने से नहीं चूकते हैं. उनका जीवन संदेश देता है कि सफलता केवल धन अर्जित करने में नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने में भी है. एक सफल व्यवसायी तब पूर्ण कहलाता है, जब उसके भीतर संवेदनशील ह्रदय और सेवा की भावना हो.उनके स्वभाव को देखकर उनकी उम्र का जहां पता नहीं चलता, वहीं सभी को प्रोत्साहित करने का काम करते हैं.

ऐसा व्यक्तित्व न केवल अपने परिवार और व्यवसाय के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणास्रोत बन जाता है. उनका जीवन संघर्ष, सफलता और संवेदना की ऐसी मिसाल है, जो आने वाली पीढ़ियों को भी आगे बढ़ने और समाजहित में कार्य करने की प्रेरणा देती रहेगी. अरूणभैया कडू को जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान परिवार तथा आनंद परिवार के साथ ही मित्र परिवार द्वारा करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. आप स्वस्थ रहें, मस्त रहें और सेवा का कार्य निरंतर जारी रहे, प्रभु चरणों में यही कामना, जन्मदिन की शुभकामनाएं. अंत में शायरी के साथ मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

हर दिन से प्यारा लगता है हमें ये खास दिन,
जिसे बिताना नहीं चाहते आप बिन।
वैसे तो दिल देता है सदा ही दुआ आपको,
फिर भी कहते हैं मुबारक हो जन्मदिन आपको।

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क,अमरावती.

गुरूवार से 12 से 18 फरवरी 2026 तक का भविष्य

मेष-फरवरी महीने का यह सप्ताह मिलाजुला रहेगा. सप्ताह के आरंभ में आपकी राशि में बुध का गोचर होगा. जबकि राहु पहले से ही आपकी राशि में विराजमान हैं. ऐसे में आपका दिमाग आपको सीधे रास्ते की बजाय पगडंडियों से ले जाने का काम करेगा और आप परंपरा से हटकर कुछ ना कुछ नया करेंगे. आप कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ कई बार तो आपके लिए भी यह समझना कठिन होगा कि आपने ऐसा क्यों किया है.

वृषभ-वृषभ राशि के जातकों के लिए सप्ताह का आरंभ रोमांटिक होगा. आप कार्यक्षेत्र में विपरीतलिंगी साथी सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त कर पाएंगे. नौकरी में आपका सम्मान बढेगा. सरकारी क्षेत्र से संबंधित काम में आपको सफलता मिलेगी. आपकी कोई कार्ययोजना सफल होने से आपका मन भी प्रसन्नचित्त रहेगा. वैसे इस हफ्ते आप चतर बुद्धि का भी खूब प्रयोग करेंगे, और इससे भी लाभ प्राप्त कर पाएंगे.

कर्क-मिथुन राशि के जातकों के लिए फरवरी महीने का यह सप्ताह उम्मीद की नई रोशनी लाएगा लेकिन शुरुआत में आपको कुछ मानसिक थकान और तनाव का सामना करना पड़ सकता है. कार्यक्षेत्र में आपके कुछ नया बदलाव दिखेगा जो आपको परेशान तो करेगा लेकिन बहुत कुछ सीखने का भी मौका देगा. आपको इस समय अवसर पर नजर बनाए रखने की जरूरत रहेगी. वैसे आपको जीवनसाथी से पूरा सहयोग मिलेगा.

सिंह-कर्क राशि के जातकों के लिए फरवरी महीने का यह सप्ताह आरंभ में मानसिक उलझन भरा रहने वाला है. राशि स्वामी चंद्रमा सिंह राशि में केतु के साथ युति संबंध बनाएंगे. ऐसे में आपको जोखिम लेने से बचना चाहिए, चोट लगने की आशंका रहेगी और कुछ गलत निर्णय की वजह से मानसिक तनाव भी मिल सकता है. जो जातक तकनीकी कार्य से जुड़े हुए हैं उनको अपनी तकनीकी क्षमता का लाभ मिलेगा.

कन्या-सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित रहने वाला है. सप्ताह के पहले भाग में आपको अधिकारियों से वाद विवाद में उलझने से बचना होगा साथ ही आपको विरोधियो और शत्रुओं से भी सतर्क रहना होगा. सरकारी क्षेत्र का कोई काम फंसा है तो आपको किसी अनुभवी व्यक्ति की मदद से फायदा हो सकता है.

तुला-कन्या राशि के जातकों के लिए फरवरी का पहला सप्ताह सामान्य रूप से अच्छा रहेगा. वैसे इस हफ्ते आपकी सफलता में आपकी चतर बुद्धि का बड़ा हाथ होगा. आप परंपरा से हटकर कुछ नया आजमाने का प्रयास कर सकते हैं. इस हफ्ते के आरंभ में ही राशि स्वामी बुध राहु से युति बनाएंगे ऐसे में आप उन क्षेत्रों से भी लाभ का अवसर निकालने में कामयाब होंगे जहां से काम बनने की उम्मीद कम होगी और इसके लिए आप उंगली टेढ़ी भी कर सकते हैं.

वृश्चिक-तुला राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह सुखद और अनुकूल रहेगा. बीमार चल रहे जातकों की सेहत में सुधार होगा. आप सप्ताह के आरंभ से भी सक्रिय और सजग नजर आएंगे. आपको अपने अनुभव और कार्यकशलता का लाभ मिलेगा. आपकी कोई अटकी योजना पूरी होगी. लव लाइफ में प्रेम और आपसी सामंजस्य बना रहेगा. कोई मित्र आपकी मदद भी कर सकता है. संतान संबंधित आपकी किसी चिंता का समाधान होगा.

धनु-गुस्से से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विनयशीलता और प्रेम से काम लेने का प्रयास करें. वाहनादि धीरे से चलाएं. परिवार में किसी के साथ मनमुटाव से बचें. आपका भाग्य चमक सकता है.

मकर-घर के बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें. समय रहते कदम उठाना उचित रहेगा. अपनों से विवाद टालें. ठंड बढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो सकती है. संबंधों पर विशेष ध्यान दें.

कुंभ-फरवरी महीने का यह पहला सप्ताह लाभ का संयोग बना रहा है. इस हफ्ते राशि से दसवें भाव में मंगल का गोचर होना आपके करियर और कारोबार के लिए शुभ रहने वाला है. आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ भी प्राप्त होगा. नौकरी में आपका प्रभाव और सम्मान बढेगा. सप्ताह के आरंभ में थोड़ी अधिक व्यस्तता रहेगी लेकिन सप्ताह मध्य का समय आपके लिए रिलैक्स करने वाला वाला रहेगा.

शुभेच्छुक

सुदर्शनजी गांग, प्रदीप जैन, प्रा.डॉ.अजय बोंडे, प्राचार्य संजय शिरभाते, सुभाष दुबे तथा समस्त विदर्भ स्वाभिमान,आनंद परिवार, अभिनंदन बैंक के सभी कर्मयोगी तथा असंख्य मित्र परिवार,अमरावती. बडनेरा.

करने का जज्बा सड़कें देती हैं हजारों को रोजगार

छोटा व्यापार भी है बड़ा आधार

ज़ीवन में अगर मेहनत की तैयारी हो तो स्थितियां सदा साथ रहती हैं, इसी बात को साबित किया है राजापेठ क्षेत्र में फुटपाथ पर गाड़ी लगाने वाले लखनऊ के करीब निवासी सलमान खान ने. दिखने में सुंदर और बातचीत में उससे भी सुंदर सलमान खान की उम्र 20 साल की है लेकिन बचपन से ही मेहनत ही कामयाबी का सूत्र होने की बात स्थितियों ने उसमें भर दी थी. दोनों भाई यहां फुटपाथ पर व्यवसाय करते विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत में उसने बताया कि जीवन में कामयाबी के लिए बस गरीबी ही काफी है. यह सिखा देती है कि जीवन का जुगाड़ किस तरह से करना चाहिए.

सलमान खान ने बताया कि यहां सुबह 8 बजे से लेकर रात्रि 8-9 बजे तक वह प्रतिदिन 1000-1200 रूपए तक कमा लेता है.उसका मानना है कि परिवार के हर सदस्य को परिवार की आर्थिक प्रगति के लिए सहयोग देना चाहिए. कुछ साल पहले ही अमरावती आए सलमान खान का कहना है कि यह शहर प्यारा लगने लगा है. यहां किसी पर भूखे पेट सोने की नौबत नहीं आती है. लोग अच्छे रहने के साथ ही सहयोग की प्रवृत्ति रखते हैं. जीवन में स्थितियों से कभी नहीं हारना चाहिए, बल्कि जब स्थितियों को हराने का जज्बा हम अपने आप में पैदा करते हैं तो निश्चित तौर पर स्थितियां हमारे पक्ष में हो जाती हैं. बचपन से ही मेहनत मशक्कत करने के बाद भी सलमान खान की प्रसन्नता धूप में खड़े रहने के बाद भी उसकी खुशी का पैमाना बता रही थी.

नौकरी से अच्छा है यह

सलमान खान ने बताया कि अगर वह किसी दुकान में नौकरी करे तो मुश्किल से 10 से 12 हजार से अधिक नहीं कमा सकता है. लेकिन मेहनत है लेकिन साथ में स्वयं की मेहनत से राहें तय करने और कामयाबी का माद्दा और अटूट विश्वास भी है. हर तरह के ग्राहकों से पाला पड़ना जीवन को कई सीख देता है. उसके मुताबिक सभी का सहयोग मिलता है. प्रति नारियल 30 रूपए के मुताबिक बेचता है, कभी एक गाड़ी तो कई बार अधिक भी मांग रहती है. इससे महीने में अच्छी खासी कमाई हो जाती है. माता-पिता तथा संयुक्त परिवार के हिमायती के साथ उसका मानना है कि एकता की शक्ति बड़ी रहती है. लेकिन परिवार के हर सदस्य को अपना योगदान परिवार की बरकत में देना चाहिए.

विदर्भ स्वाभिमान 942342199

महान परमार्थी, महान त्यागी हैं भोलेनाथ

पुरूषोत्तम नगर की श्री शिव महापुराण कथा में रवीन्द्र महाराज का उपदेश

विदर्भ स्वाभिमान, 11 फरवरी

अमरावती- जीवन में जो लोग केवल अपना सोचते हैं, भरपूर रहने के बाद भी रोते रहते हैं, उनका जीवन उसी तरह हो जाता है, लाखों कमाने के बाद भी उनके जीवन से खुशियां दूर रहती हैं. लेकिन जो लोग जीवन में दूसरों का पहले विचार करते हैं, उन्हें दिक्कतें भी प्रभावित नहीं कर पाती हैं. जीवन में परमार्थ, त्याग का सबसे बड़े उदाहरण भगवान भोलेनाथ हैं. समुद्र मंथन के बाद हर चीजें देव-दानवों ने बांट ली लेकिन खतरनाक विष पीकर जगत का कल्याण करने का भाव केवल भगवान भोलेनाथ में था, इसीलिए वह सर्वप्रिय और सभी के लिए पूज्यनीय हो गए हैं. मानव जीवन को जब परमार्थ का साथ मिलता है तो वह संवर जाता है. इस आशय का उपदेशपूर्ण प्रतिपादन रवीन्द्र महाराज ने किया. भगवान शिव परमार्थ यानी दूसरों के कल्याण के लिए समर्पण के सर्वोच्च उदाहरण हैं. उनका संपूर्ण जीवन त्याग, करुणा और लोकमंगल की भावना से भरा हुआ है.समुद्र मंथन का प्रसंग इसका सबसे बड़ा प्रमाण है. जब मंथन से विष निकला और संपूर्ण सृष्टि संकट में पड़ गई, तब किसी देवता या दानव ने उसे ग्रहण करने का साहस नहीं किया. उस समय भोलेनाथ ने बिना किसी स्वार्थ के वह घातक विष स्वयं पी लिया और नीलकंठ कहलाए. इस माध्यम से परमार्थ सर्वोच्च रहने का संदेश भी मानव जाति को दिया. इस आशय का उपदेशपूर्ण प्रतिपादन पुरूषोत्तम नगर के श्री नर्मदेश्वर शिव मंदिर में जारी संगीतमय श्री शिव महापुराण कथा सप्ताह में रवीन्द्र महाराज ने किया.

कथा को जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि भोलेनाथ का स्वरूप भी हमें यही संदेश देता है. वे कैलाश पर साधारण जीवन जीते हैं, भस्म लगाते हैं, व्याघ्रचर्म धारण करते हैं. उनके पास वैभव नहीं, लेकिन वे देवों के देव हैं. वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची महानता बाहरी ऐश्वर्य में नहीं, बल्कि त्याग और करुणा में है. शिव सबको समान दृष्टि से देखते हैं, सभी के लिए पूज्यनीय हैं. देव, दानव, मानव, पशु, प्रेत सभी उनके गण हैं. वे किसी से भेदभाव नहीं करते. जो सच्चे मन से उन्हें पुकारता है, वे तुरंत प्रसन्न हो जाते हैं. शिव का जीवन हमें सिखाता है कि यदि हम समाज, परिवार और राष्ट्र के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करें, तो वही सच्ची शिव भक्ति है. केवल पूजा-पाठ ही नहीं, बल्कि सेवा, सहयोग और करुणा ही शिवत्व का मार्ग है. जीवन में हर व्यक्ति को इसका पालन करने की सलाह दी. कार्यक्रम की सफलतार्थ दिलीप मकवाने के नेतृत्व में सभी पदाधिकारी तथा विश्वस्तों द्वारा प्रयास किया जा रहा है. इस धार्मिक आयोजन से क्षेत्र में भक्तिभाव की गंगा के साथ ही संस्कारों की भी गंगा बह रही है. कथा सुनने बड़ी संख्या में भक्त पहुंच रहे हैं. ट्रस्ट अध्यक्ष दिलीप मकवाने, नंदकिशोर पेटकर, प्रमोद राऊत सहित सभी प्रयासरत हैं.

राजपुरोहित
फोटो स्टुडीओ
वेडिंग फोटोग्राफी
इवेंट फोटोग्राफी
इन डोअर, आऊट डोअर फोटोग्राफी
HD व्हिडीओ शुटींग
इंस्टाग्राम रील
कॉफी मग प्रिंटींग
ड्रोन शुट
फोटो अलबम
मोबाईल प्रिंटींग

नया पत्ता : शितला माता मंदीर के सामने
शिलांगण रोड, अमरावती
संपर्क : 9028123251

सभी का चहेता,यारों का यार भास्कर खराबे

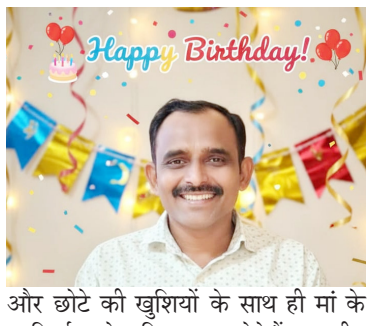

ज़ीवन में कुछ लोग ऐसे भी किसी मोड़ पर मिल जाते हैं जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है. ऐसे ही लोगों में भास्कर खराबे भी हैं. बचपन से ही मेहनत, संघर्ष का पाला पड़ने के बाद भी कभी स्थितियों से हार नहीं मानते हुए गन्ने के जूस, केले की गाड़ी लगाने से लेकर अपने परिवार तथा बच्चों के लिए वह कोई भी मेहनत करने से कभी परहेज नहीं किया. कहते हैं कि मेहनती के लिए सफलता इंतजार करती है. आज उम्र के 46वें जन्मदिन पर उन्हें विदर्भ स्वाभिमान परिवार की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

वर्तमान में कम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में जहां वे काम कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पत्नी और दोनों बेटों पार्थ और छोटे की खुशियों के साथ ही मां के आशिर्वाद को अधिक महत्व देते हैं. बातचीत में वे बताते हैं कि जीवन में जो व्यक्ति काम में शर्म करता है, काम कभी उसका इंतजार नहीं करता है. लेकिन जो व्यक्ति काम को आनंद से करता है, काम सदा उसका इंतजार करता है. भास्कर खराबे की शांति, संयम और हर बात को गंभीरता से सुनने के बाद भी कई बार प्रतिक्रिया नहीं देने की खूबी सीखने लायक है. सुबह 10 बजे से काम की शुरू होने वाली प्रक्रिया रात 10-11 बजे खत्म होने के बाद भी उनके चेहरे पर कभी उदासी नहीं दिखाई देती है. इस बारे में पूछने पर उनका कहना है कि प्रभु की कृपा और भक्तिभावपूर्ण आचरण से सदा प्रेरणा मिलती है.बेटे पार्थ के लिए आसमानी कामयाबी के साथ जीवन की खुशियों का श्रेय मां के आशिर्वाद और पत्नी तथा छोटे बेटे को देता है. हमारी मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क

जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएं

भास्कर खराबे

हर दिन से प्यारा लगता है हमें ये खास दिन,
जिसे बिताना नहीं चाहते आप बिन।
वैसे तो दिल देता है सदा ही दुआ आपको,
फिर भी कहते हैं मुबारक हो जन्मदिन आपको।

शुभेच्छुक
खराबे परिवार, विदर्भ स्वाभिमान परिवार तथा मित्र परिवार, अमरावती, यवतमाल

आचार, विचार, संस्कारों के साथ ही संयुक्त परिवार, मानवता और भारतीयता को समर्पित सर्वाधिक लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र के ग्राहक बनकर अच्छाई को बढ़ावा देने में अपना हाथ बंटाए, आज ही सदस्यता फार्म भरें
विदर्भ स्वाभिमान
संपर्क
9423426199/8855019189

महापौर- उपमहापौर के लिए चुनौतियां भी कम नहीं

पहली बैठक में ही दिखाया श्रीचंद तेजवानी ने अपने काम का इरादा, सचिन भेंडे भी समस्याओं पर हैं गंभीर

विदर्भ स्वाभिमान, 11 फरवरी

अमरावती- राज्य में अमरावती संभागीय मुख्यालय होने के बाद भी जिस विकास का हकदार था, वह उसे प्राप्त नहीं हो पाया है. महानगर पालिका के महापौर और उपमहापौर चुनाव में विधायक रवि राणा का जादू फिर एक बार चला और उनकी योजना के मुताबिक ही महापौर-उपमहापौर चुनाव में भाजपा-युवा स्वाभिमान पार्टी के अलावा राकांपा अजीत पवार गुट के साथ छोटे दलों के साथ मिलकर महापौर के रूप में भाजपा के अनुभवी और सेवाभावी नेता श्रीचंद तेजवानी को महापौर बनाते हुए जहां सिंधी समाज को न्याय देने का प्रयास किया, वहीं उनकी रूप में राज्य में भी अमरावती शहर का नाम चमकाने का प्रयास किया गया.

साईंनगर प्रभाग में बिना किसी पद पर रहते हुए करोड़ों रूपए के विकास काम के माध्यम से लोगों के दिलों में जगह बनाने वाले सचिन भें डे बोलने में कम और करने में अधिक विश्वास करने वाले युवा नेता हैं. साईंनगर प्रभाग का इस बार का चुनाव न केवल शहर बल्कि जिला और राज्यस्तर पर चर्चित रहा. यहां से दमदार को पांच हजार के रिकार्ड वोटों से हराकर पार्षद बने सचिन भेंडे पहले ऐसे नगर सेवक भी बन गए, जिन्हें नगर सेवक बनने के पहले ही कार्यकाल में उपमहापौर बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ. वे जितने बेहतरीन युवा नेता हैं, उतने ही बेहतरीन, कर्मठ और सभी को साथ में लेकर चलने वाले व्यक्ति हैं. यही कारण है कि चुनाव में लोगों ने उन पर पूरा प्रेम न्यौछावर किया. महापौर श्रीचंद तेजवानी भाजपा के अनुभवी और लोकप्रिय नेताओं में से एक हैं. उन्हें जिस तरह से महापौर बनाया गया, उसके चलते उनका जहां दबदबा स्पष्ट दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर दोनों ही शहर की

समस्याओं से वाकिफ हैं.वे राजनेता के साथ ही बेहतरीन समाजसेवी भी हैं और समाज ही नहीं तो शहर की विभिन्न समस्याओं के निराकरण के साथ ही वर्ष भर स्वयं के बलबूते तथा संगठन और समाज के माध्यम से विभिन्न सामाजिक उपक्रम लेते हैं. यही कारण है कि सिंधी समाज के भले ही हैं लेकिन वह सभी के चहेते हैं. शहर के प्रति अपार प्रेम रहने के कारण जनता ने भी उन्हें कई बार नगर सेवक चुनकर उनमें विश्वास जताया है. महापौर चुने जाने के बाद जिस तरह से शहर विकास को लेकर उन्हों ने प्रतिबद्धता जताई है, उसके बेहतरीन परिणाम शहरवासियों को शीघ्र ही दिखाई देने लगेंगे.महापौर ने पहली ही बैठक में प्रशासन को नागरी सुविधाओं के साथ ही स्वच्छता,जलापूर्ति, प्रकाश व्यवस्था सहित काम की गति बढ़ाने का निर्देश दिया है. दोनों के समक्ष चुनौतियां और शहरवासियों की अपेक्षाएं भरपूर हैं लेकिन दोनों के अनुभवों और जमीन से जुड़े रहने के कारण यह चुनौतियों से निपटने में सक्षम रहने का भरोसा भी है.

जिद्दी हैं सचिन भेंडे

उपमहापौर सचिन भें डे जनसेवी, विकास का विजन रखने वाले युवा नेता हैं. विधायक रवि राणा और पूर्व सांसद नवनीत राणा के अत्याधिक विश्वासपात्र होने के कारण विकास के लिए निधि की कमी नहीं पड़ने वाली है. स्वयं भी जिद्दी और ठाना उसे पूरा करने की मानसिकता के कारण निश्चित तौर पर दोनों की जोड़ी शहरवासियों को स्वच्छ शहर, सुंदर शहर का सौगात देगी. शहर की सुंदरता को ग्रहण लगाने का काम घुमंतु कर रहे हैं, उनके सामने पुलिस तथा मनपा प्रशासन अभी तक लाचार रहा है. शहर की सुंदरता के इस विषय को हैंडल करना भी चुनौती है. लेकिन भरोसा है कि दोनों निश्चित तौर पर शहरवासियों की उम्मीदों पर खरा उतरेंगे.

श्री बालाजी
कॅटरर्स
आमचे येथे लग्न, वाढदिवस, वास्तु व शुभ कार्यप्रसंगी स्वादिष्ट भोजनाचे ऑर्डर स्विकारल्या जाईल.
भट्टवाडी, गोपाल नगर, अमरावती.
द्वारका महाराज व्यास मो.८२०८०३६१६७
अर्जुन व्यास – मो. ९९७५२७७१९९

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा
शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.
--संपर्क--
प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

सन् 1967 पासून
अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट
संजय एजंसीज्
टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन 2564125,2674048

मजबूत,टिकाऊ, उच्चगुणवत्तायुक्त नवीन मकान विकायचा आहे. गुढीपाडवा आणि चैत्र नवरात्रिच्या हार्दिक शुभेच्छा. 2 बीएचके किचन ट्राल्या, पीओपी कलरिंग सोबतच पंखे गिझर सर्व तयारी.इच्छुकांना स्वतः भेंट देऊन खात्री करावी. शांतिनिकेतन स्कूल रोड,पुष्पक कॉलनी मेन रोड पूर्व मुख्य 1350 फुट बांधकाम
संपर्क मोबाइल नंबर
9881388450